515

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट–9
(प्रश्न पत्र–I)

DTVF / OPT-24 **HL-2409**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Prem

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 23/08/2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

1	1	3	2	5	5	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

---

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अवधी अवध प्रदेश की बोली है जिसका विकास प्रेमाश्रयी सूफी काव्य तथा राम काव्य धारा में हुआ तथा मलिक मोहम्मद जायसी व तुलसी जैसे महान प्रबंध काव्य के रचनाकार पैदा हुए। अवधी की साहित्यिक विशेषताओं के साथ कुछ सीमाएं भी थी जो निम्न प्रकार है:-

① मुक्तक काव्य का अभाव – अवधी चंचलता की तेजी का अभाव है जिससे मुक्तक काव्य नहीं लिखा गया जबकी ब्रजभाषा में बिहारी जैसे रचनाकार हुए।

② संयोग श्रृंगार का अभाव :–

अवधी में माधुरता व गंभीरता भरा साहित्य रचा गया जो मध्यकालीन दरबारी रसिकों को श्रृंगारिक काव्य का सुख नहीं दे पाया।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) अवधी अपने क्षेत्र का अतिक्रमण नहीं कर पायी। जबकि ब्रज भाषा सम्पूर्ण देश में साहित्यिक भाषा के रूप में फली-फूली।

(4) अवधी में यद्यपि रामचरित मानस व पद्मावत जैसा काव्य रचा गया परन्तु अवधी को राजाश्रय नहीं मिला फलस्वरूप अवधी का उचित विकास नहीं हो पाया। तथा एक क्षेत्रीय बोली के रूप में रह गयी।

यद्यपि अवधी की कुछ सीमाएं थी तब भी अवधी अपनी व्यापक विकास व जनप्रिय साहित्य के लिए जानी जाती है।

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' का योगदान

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार - प्रसार में काशी नागरी प्रचारिणी सभा व दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा दोनो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो निम्न प्रकार है :-

(1) काशी नागरी प्रचारिणी सभा

→ हिन्दी साहित्य का इतिहास' की रचना

→ हिन्दी की मानक व्याकरण रचना' किशोरी दास द्वारा।

→ नागरी लिपि के सुधार हेतु प्रयास -

↳ अनुस्वार के रूप में पंचमाक्षर

↳ शिरोरेखा टंकण में रहे परन्तु लेखन में नही।

↳ मात्रा व्यवस्था

→ हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना तथा भारत में हिन्दी प्रचार।

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

(1) दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार - तमिल मद्रास, कर्नाटक व केरल

(2) गांधी जी के पुत्र मद्रास गये।

(3) दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रति जन जागृति।

(4) दामोदरन उण्णि जी, नायर व हार्डीकर के माध्यम से हिन्दी का प्रचार - प्रसार।

अतः नागरी प्रचारिणी सभा व दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का हिन्दी को भारत की संपर्क भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खड़ी बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। तथा यह कौरवी या कुरु प्रदेश की बोली है। सन्त साहित्य में कबीर, दादू, मीरा, रैदास, नानक, मलूक दास आदि के काव्य को शामिल किया जाता है।

संत साहित्य का विकास नाथ साहित्य के गोरख नाथ के साहित्य से शुरू होता है जिसमें आरम्भिक खड़ी बोली की विशेषताएं दिखाई देने लगती है।

"नौ लख पातर आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन ले जोगी खेले, तब अन्तरी बसे भंडारा।"

कबीर दास के साहित्य में आरम्भिक खड़ी बोली का स्वरूप अकारान्तता, आकारान्तता, न. की जगह ण आदि विशेषताएं दिखाई पड़ती है।

"हम घर जारा आपणो, लियों मुराड़ा हाथ"

इसमें न की जगह ण, र की जगह ड़ तथा अकारान्त व आकारान्तता विशेषताएं भी

drishti | दृष्टि The Vision

बोली से ली गई है।

इसी प्रकार मलूक दास का निम्न पद परिनिष्ठित खड़ी बोली की विशेषताएं शामिल करता है -

" अजगर करै न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम ॥"

मीरा के साहित्य में भी खड़ी बोली का मिश्रित स्वरूप दिखाई पड़ता है -

" हे री मैं तो दरद दीवाणी,
मेरो दरद न जाणै कोय।"

संत काव्य में रहीम के काव्य में भी प्रारम्भिक खड़ी बोली का स्वरूप दिखाई पड़ता है जो ब्रज मिश्रित स्वरूप है -

" रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून ॥"

अत: संत साहित्य में खड़ी बोली की आरम्भिक झलक दिखाई पड़ती है जो आधुनिक काव्य में जाकर परिपूर्ण हुई।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अयोध्या प्रसाद खत्री का खड़ी बोली हिन्दी के विकास में प्रमुख योगदान रहा रहा। खत्री जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ हिन्दी के मानक रूप की स्थापना हेतु भी प्रयास किया।

प्रमुख योगदान

(1) हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा मानकता हेतु प्रयास - नागरी प्रचारिणी सभा के साथ

(2) संविधान सभा में हिन्दी राजभाषा का समर्थन तथा हिन्दी भाषा का प्रश्न उठाना

(3) अयोध्या प्रसाद खत्री ने हिन्दी

प्रचार हेतु अपनी राजनीतिक पार्टी के सिद्धांतों के आधार मतदान किया।

अतः इस प्रकार आंबेडकर प्रखर वक्ता व विद्वान प्रचार-प्रसार के महती योगदान रहा। जिसभांति उन्हें विद्वान का जाता। व संविधान का जनक भी माना है

(ङ) 'कुमाऊँनी' बोली

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'कुमाऊँनी' कुमाऊँ प्रदेश की बोली है जो उत्तराखण्ड के कुमाऊ क्षेत्र नैनीताल, अल्मोड़ा, हल्द्वानी में बोली जाती है इसका विकास खस अपभ्रंश से हुआ है

कुमाऊँनी की भाषा गत विशेषताएं ⇒

① कुमाऊँनी पर राजस्थानी उपबोली का अधिक प्रभाव है

② कुमाऊँनी उकारान्तता बहुल बोली है

③ कुमाऊँनी में संज्ञा के बहुवचन बनाने हेतु 'न' जोड़ा जाता है-

- घोड़ा > घोड़न

④ विशेषण संज्ञा के अनुसार परिवर्तनशील-
काला छोरा > कालो छोरो

⑤ अकारान्त अनुनासिक की प्रवृत्ति -
उदा पैंसा, दैंत।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(6) संज्ञा के दो रूप -
घोड़ा > घ्वाड़ व घोड़

(7) कुमाऊँनी में वर्तमान के लिए 'ल' रूप का प्रयोग -

उदा० > 'चलला'

अतः कुमाऊँनी पर राजस्थानी के मूर्धन्य 'ळ' के साथ-साथ पंजाबी भाषा का भी प्रभाव देखा जा सकता है

2. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) हिन्दी संज्ञाओं के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पूर्वी हिंदी व पश्चिमी हिन्दी की दो प्रमुख उपभाषाएं ~~उपबोलियाँ~~ है जिनका विकास क्रमशः अर्द्ध मागधी अपभ्रंश व शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है

प्राकृत
- पूर्वी हिन्दी
  - अवधी
  - बघेली
  - छत्तीसगढ़ी
- पश्चिमी हिन्दी
  - खड़ी बोली
  - ब्रज
  - राजस्थानी
  - दक्खिनी हिंदी

पूर्वी व पश्चिमी हिन्दी का भाषा क्षेत्र →

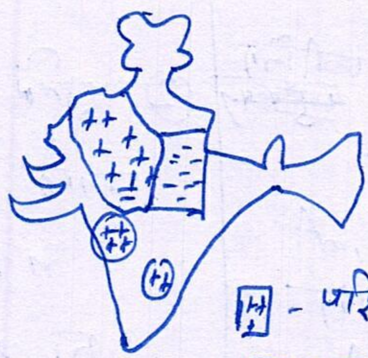

(+) - पश्चिमी हिन्दी

(=) पूर्वी हिन्दी

पूर्वी हिन्दी मुख्य लखनऊ, अवध, सीतापुर, जौनपुर, रायपुर, छत्तीसगढ़ क्षेत्र में बोली जाती है

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वही पश्चिमी हिन्दी उत्तर में पड़ीनाथ से लेकर मेरठ, दिल्ली, ब्रजप्रदेश, आगरा, राजस्थान में बोली जाती है।

पूर्वी व पश्चिमी हिन्दी में व्याकरणिक भिन्नताओं को हम अवधी व ब्रज भाषा के अन्तरों के माध्यम से समझ सकते हैं।

पूर्वी हिन्दी	पश्चिमी हिन्दी
① संज्ञा के तीन रूप दिखाई पड़ते हैं। उदा. घोड़ा, घोरवा, घोरवना - लरका, लरकवा, व लरकना	① संज्ञा का प्रायः एक ही रूप - घोड़ा > घोड़ा, लड़का > लड़का
② पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए प्रायः अन, इन, नी प्रत्यय का प्रयोग उदा. मोर > मोरनी, सेठ > सेठाइन, माली > मालन	② पुल्लिंग से स्त्री लिंग बनाने हेतु ई, नी, इन, अन, आइन प्रत्ययों का प्रयोग - घोड़ा > घोड़ी, लहुआइन, लुहारिन

drishti | दृष्टि The Vision

पूर्वी	पश्चिमी
③ एक वचन से बहुवचन बनाने हेतु न्ह, न ऐ प्रत्यय का प्रयोग उदा. रतन हुआ जिन हालन्ह लेली	③ एक वचन से बहुवचन बनाने हेतु प्रायः ऐकारान्त व ओकारान्तता तथा ए, ऐ, ओ का प्रयोग - स्त्रीलिंग-स्त्रियाँ लड़का > लड़के लड़की > लड़कियाँ
④ विशेषण प्रायः संज्ञा व क्रिया अनुसार अपरिवर्तित रहते हैं - उदा. छोट छिलियाँ छोट लड़का	④ विशेषण प्रायः संज्ञा व सर्वनाम के अनुसार परिवर्तित हो जाते हैं - छोटा बेटा छोटी बेटी
⑤ पूर्वी हिन्दी के प्रमुख सर्वनामों मे - न्हे, तुम्हार, आपन, हमार तुही इत्यादि का प्रयोग	⑤ पश्चिमी हिन्दी के सर्वनामों मे तुम्हे, थारा, तेरा, मेरा, आपना, तु, तुई का प्रयोग किया जाता है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

पूर्वी हिन्दी	पश्चिमी
⑥ कारक व्यवस्था में परसर्गों का प्रयोग तथा प्रमुख परसर्गों में - ने, को, को, सेर, ले के वास्ते, आला हेतु प्रमुख → निविभक्तिक प्रयोग भी देखे जाते	⑥ पश्चिमी हिन्दी की कारक व्यवस्था में वर्तमान परसर्गों का प्रयोग - ने, को, जे, के लिए, से का प्रयोग → ऐसी प्रवृत्ति नहीं
⑦ क्रिया के रूप में वर्तमान हेतु - ह, वलरूप भूतकाल हेतु - व रूप उदा. इआइव, आस्व भविष्य काल हेतु - व रूप - खवाइव	⑦ क्रिया रूपों में वर्तमान के लिए - है रूप भूतकाल हे - आयो, गयो "आयो थोक बड़ो व्यापारी" भविष्य हेतु - आयगो, जायगो का 'गा' रूप का प्रयोग

अतः पूर्वी व पश्चिमी हिन्दी उपभाषा ने हिन्दी भाषा व साहित्य को समृद्ध किया है। जहाँ एक ओर तुलसी व जायसी जैसे प्रबंध कवि दिये तो दूसरी ओर सूर, बिहारी जैसे मुक्तक काव्य के सम्राट।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेषण वे क्रिया पद है जो संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताते है तथा वे क्रिया, संज्ञा व सर्वनाम के आगे जुड़कर अर्थ परिवर्तन या अर्थ की महत्ता को बढ़ा देते है

विशेषण ~~भाषा~~ के प्रकार - ① क्रिया विशेषण ② प्र विशेषण इत्यादि प्रमुख है

विशेषण व्यवस्था।

① विशेषण संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता को प्रकट करते है -

जैसे - 'लंबा लड़का', पढ़ाकू लड़की

यहाँ 'लँबा व पढ़ाकू' शब्द संज्ञा की विशेषता बतलाते है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

② विशेषण प्रायः संज्ञा व सर्वनाम की लिंगानुसार परिवर्तित हो जाते हैं।

— उदा. छोटा लड़का, छोटी लड़की

③ ~~कुछ~~ जो विशेषण क्रिया से पहले आकर क्रिया की तीव्रता को दिखाते हैं वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं —

उदा. → तेज चलना
→ धीरे-धीरे गिरना

④ कुछ विशेषण ~~व~~ संज्ञा व सर्वनाम के साथ आने वाले विशेषण की विशेषता बताते हैं उन्हें प्रविशेषण कहा जाता है — जैसे

— उदा. यह बहुत लंबा आदमी है
↓ प्रविशेषण (बहुत), विशेषण (लंबा)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अतः इस प्रकार हिन्दी की विशेषण व्यवस्था पूर्णतया वैज्ञानिक व संस्कृत की संश्लेषणात्मक व्यवस्था पर आधारित है।

(ग) क्या अवहट्ट को स्वतंत्र भाषा मानना उचित है? इस प्रश्न का तार्किक उत्तर देते हुए अवहट्ट की शब्दकोशीय विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अवहट्ट हिन्दी भाषिक विकास की चतुर्थ अवस्था है तथा इसका विकास 13-14वीं सदी के मध्य माना जाता है

अवहट्ट के प्रारंभिक अभिलेख व स्वरूप राउलवेल, पउम चरिउ, पाउड दोहा तथा विद्यापति के काव्य में देखा जा सकता है

अवहट्ट का विकास संस्कृत से सरलीकरण की विधि द्वारा हुआ हुआ था। विद्यापति के काव्य में अवहट्ट का विशेष स्वरूप देखा जाता है अवहट्ट को 'जन भाषा' इत्यादि ना व्याडि, पतंजली इत्यादि संस्कृत आचार्यों ने दिया है वर्तमान समय के अवहट्ट को स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिया गया है

drishti | दृष्टि The Vision

विद्यापति ने भी अवहट्ट की लोकप्रियता से प्रभावित होकर कहा है -

" सक्कय वाणी बुहजन भावई, पाउअ रस को मम्म न पावई।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तें तैसन जंपओ अवहट्ठा।"

अपभ्रंश की शब्द कोशीय विशेषताएं

(1) अपभ्रंश में संस्कृत की सरली करण विधि के कारण - तद्भव शब्दों की प्रवृत्ति मिलती है -

उदा. पानी, अमृत, रात

(2) अवहट्ठ में शब्दों के लघु रूप के कारण प्राय: य, व, ह का अ। रूप में परिवर्तन -

आत्मा = आता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) अवहट्ठ में देशज शब्दों के प्रयोग की प्रवृत्ति काफी तेजी से बढ़ी-

उदा- द्विड्डी, खिणाखिणी, गक्क, ठुमकना, घाघरा, घिरनी

(4) अवहट्ठ में विदेशज शब्दों का प्रयोग बढ़ा तथा अरबी-फारसी के शब्दों के प्रयोग किया जाने लगा-

उदा. नौबत, तहसीलदार, बेताब, बेदाग,

(5) अवहट्ठ में पुनः तत्सम शब्दों के प्रयोग बढ़ने लगा। क्योंकि अधिक सरलीकरण के कारण शब्दों में समानता बढ़ने लगी थी।

अतः अवहट्ठ भाषा का आधुनिक हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानक हिन्दी की कारक व्यवस्था का विकास संस्कृत की विभक्ति आधारित कारक परम्परा से हुई है। परन्तु हिन्दी कारक व्यवस्था में संस्कृत की विभक्तियों के स्थान पर 'परसर्गों' का प्रयोग किया जाता है।

कारक व्यवस्था किसी भी वाक्य में क्रिया से सम्बंध संज्ञा व सर्वनाम का निर्धारण करते हैं। हिन्दी की कारक व्यवस्था निम्नानुसार है—

① कर्ता कारक :— परसर्ग के रूप में 'ने' परसर्ग का प्रयोग — यथा संज्ञा से परसर्ग को अलग किया जाता है व सर्वनाम के साथ संलग्न)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उदाहरण. मैंने खाना खाया।
राम ने रावण को मारा

② कर्म कारक : कर्म कारक के परसर्ग के रूप में 'को' परसर्ग प्रयोग यह कर्ता द्वारा किये गये कर्म के मध्य सम्बंध दिखाता है।

'राम ने रावण को मारा।

③ करण - परसर्ग के रूप में 'से'। जिस साधन या संसाधन द्वारा कार्य का होना पाया जाता है।-

उदा - रावण ने रावण को बाण से मारा।

④ सम्प्रदान - परसर्ग - के लिए, कर्ता द्वारा किये गये के कार्य का औचित्य व कारण बताता है।

उदा. राम ने रावण को सीता के लिए मारा

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

⑤ अपादान - 'से' परसर्ग (वियोगार्थ में)

उदा - पेड़ से पत्ता गिरा

इसमें अलगाव होने का भाव दिखाई पड़ता है।

⑥ अधिकरण - 'में, पर, हेतु' परसर्गों का प्रयोग। कर्ता द्वारा किये गये कर्म की वास्तु स्थिति का पता चलता है।

उदा॰ राम जमीन पर चलता है।

अर्थात वास्तु स्थल पर स्थापित है।

⑦ सम्बोधन कारक - कर्ता द्वारा किसी व्यक्ति / वस्तु का सम्बोधन किया जाता है। परसर्गों के रूप में - हे, अरे का प्रयोग किया

drishti | दृष्टि The Vision

जाता है। कारक व्यवस्था के सम्बोधन कारक का प्रयोग सबसे पहले किया जाता है।

उदा. है! राम तुम कहाँ जा रहे हो।

अतः इस प्रकार मानक हिन्दी की कारक व्यवस्था पूर्णतया संस्कृत की वैज्ञानिक परम्परा पर आधारित है और परसर्गों का प्रयोग अपभ्रंश व अवहट्ट की सरलीकरण प्रवृत्ति के उत्पन्न प्रक्रिया है जो कारक व्यवस्था का विकास बताती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानक हिंदी व्याकरण में वाक्य संरचना की इसकी विशेष महत्ता है। वाक्य से आशय है व्याकरणिक नियमों के आधार पर निर्मित कर्ता, कर्म व क्रियाओं का व्यवस्थित शब्दों का स्वरूप।

उदा. मैं जाता हूँ

मानक हिंदी की वाक्य संरचना

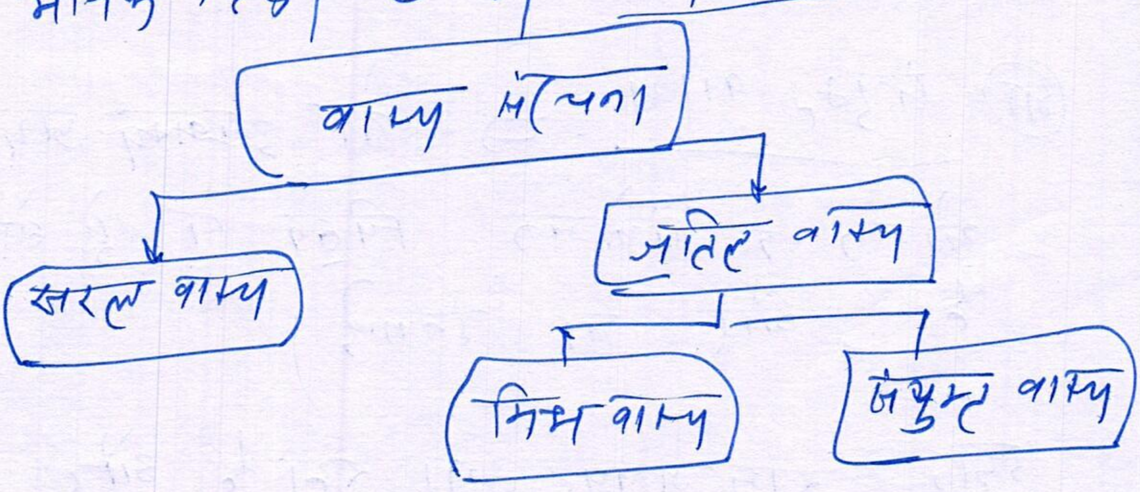

① सरल वाक्य - इसमें एक उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है

उदा. राम ने रावण को मारा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2) जटिल वाक्य - इसके अधिक विधेय व उद्देश्य होते है।

(अ) मिश्र वाक्य ⇒ एक प्रधान उपवाक्य तथा उस पर आधारित एक आश्रित उप वाक्य भी उपस्थित होता है।

उदा. राम ने बहुत मेहनत की परन्तु परीक्षा में असफल हो गया।

(आ) संयुक्त वाक्य ⇒ दो उपवाक्य प्राय. योजक व संयोजक चिह्न से जुड़े होते है. और, या, इत्यादि।

उदा. राम जयपुर जा रहा है और सीता दिल्ली जा रही है।

वाक्य की संरचना उनके उद्देश्य के आधार पर भी की जाती है

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उद्देश्य के आधार पर वाक्य

① प्रश्नवाचक - कौन गया

② सकारात्मक -

③ निजवाचक → मेरा घर

④ नकारात्मक → मैं नहीं गया

⑤ निश्चयवाचक → यही पुस्तक

⑥ अनिश्चयवाचक → कोई पुस्तक

⑦ संदेहवाचक → बारिश का अंदेशा है।

⑧ विस्मयादिबोधक वाक्य

वाच्य के आधार पर वर्ग

कर्मवाच्य | कर्तावाच्य | क्रियावाच्य

अतः मानकीकृत भी वाक्य संरचना न केवल वैज्ञानिक है बल्कि सरल व स्पष्ट भी है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खड़ी बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है तथा यह कुछ प्रदेश में कौरवी बोली कही जाती है। खड़ी बोली का क्षेत्र - अंबाला, दिल्ली, मेरठ के आस पास का क्षेत्र है। खड़ी बोली का आरम्भिक स्वरूप अमीर खुसरो के काव्य में दिखाई पड़ता है -

"खीर पकाई जतन से चरखा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा।।"

खड़ी बोली की भाषिक विशेषताएं

(1) खड़ी बोली में अकारान्तता व आकारान्तता की प्रवृत्ति पाई जाती है।

(2) ऐ, औ का प्रयोग प्रायः ए, ओ रूप में - औरत > ओरत

63

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) न का प्रयोग ण तथा र ड़ के रूप में
सरक > सड़क
पानी > पाणी

(4) मूर्धन्य ळ का प्रयोग किया जाता है।
जल > जळ

(5) संज्ञा का प्रायः एक ही रूप दिखाई पड़ता है
लड़का, घोड़ा,

(6) एकवचन से बहुवचन हेतु अकारान्त व ~~आ~~ पुल्लिंग व ~~अ~~आकारान्त स्त्रीलिंग प्राय एकारान्त हो जाती है।
लड़का > लड़के

(7) स्त्रीलिंग संज्ञाओं के इयाँ, इया, का प्रयोग बहुवचन हेतु -
लड़की > लड़कियाँ
गोपी > गोपियाँ

(8) संज्ञा का पुल्लिंग में स्त्रीलिंग परिवर्तन हेतु - नी, इनी, आइन, ईनी, प्रत्ययों का प्रयोग -

उदा सेठ > सेठाइन
ठाकुर > ठकुराइन
मोर > मोरनी

(9) क्रिया के वर्तमान हेतु है रूप भूतकाल हेतु - था, था व भविष्य हेतु गा, गी रूप का प्रयोग

(10) सर्वनामों के रूप में - मैं, मेरा, तू, तेरा, हमारा, थारा, मोसू इत्यादि का प्रयोग

(11) कारकों के रूप में कर्ता हेतु ने, जे, सम्बन्ध हेतु. का, के, की का प्रयोग हुआ है

अतः खड़ी बोली के शब्दों के रूप में तद्भव, तत्सम का प्रयोग किया जाता है। आरम्भिक खड़ी बोली गद्यात्मक, अभिधात्मक है वहीं छायावादी हिन्दी परिनिष्ठित सौन्दर्य व माधुर्य युक्त है

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) निराला के प्रगीत

छायावादी काव्य में प्रगीत प्रमुख विधा के रूप में उभरी। प्रगीत में कवि की भावनाओं का अधिक महत्व होता है। निराला व महादेवी वर्मा ने प्रगीतों की रचना की है।

निराला के प्रगीतों में ~~निराला~~ जूही की कली, सरोज स्मृति, तुलसीदास, अट्टम एडवर्ड आदि प्रमुख है।

निराला के प्रगीतों की विशेषता

(1) निराला के संघर्षपूर्ण जीवन का उचित चित्रण —

"दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूं आज जो नहीं कही।"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(2) निराला की भावुकता अत्यन्त उच्च कोटि की है।

(3) निराला का अपनी बेटी व पत्नी मनोहरा देवी के प्रति समर्पण का चित्रण किया गया है।

(4) निराला के प्रगीत एक कवि के भावुक मन व आर्थिक समस्याओं को चित्रित करते हैं।

अतः छायावादी आत्मकथा, वैयक्तिकता व व्यक्तिवादी साहित्य के आलोक में निराला के प्रगीत प्रमुख हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हालावाद

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हालावाद छायावाद के समानान्तर तथा प्रगतिवाद से पूर्व चलाया गया काव्य आंदोलन था। जिसके प्रमुख हरिवंश राय बच्चन ने हाला अर्थात मदिरा के आधार पर काव्य रचना की। बच्चन की प्रमुख कृतियों में - मधुशाला, मधु कलश, प्रमुख है।

हालावाद की विशेषताएं

① हाला के माध्यम से प्रतीकात्मक कथन

"बैर बढ़ाते मंदिर मस्जिद मेल कराती मधुशाला"

② के कवि साहित्य का उद्देश्य समाज को जोड़ना मानते हैं

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(3) हालावादी कवियों अपने साहित्य में समाज को नया संदेश दिया।

(4) हालावाद अपनी सम्प्रदाय निरपेक्षता व प्रगतिशीलता हेतु जाति से मानव आंदोलन था।

अतः इस प्रकार हालावाद हिंदी साहित्य का प्रमुख आंदोलन था।

(ग) प्रपद्यवाद

प्रपद्यवाद या नकेनवाद 1970 के आस-पास उत्पन्न हुआ नया आंदोलन था। प्रपद्यवाद का उदय चौथे तार सप्तक के सम्पादन के समय हुआ था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(घ) 'आंचलिक कहानी' का परिचय

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आंचलिक कहानी विधा में किसी अंचल विशेष की सांस्कृतिक व भौगोलिक चित्रण किया जाता है। प्रमुख आंचलिक कहानीकारों में फणीश्वर नाथ रेणु, नागार्जुन, राहुल सांकृत्यायन इत्यादि प्रमुख है। रेणु की प्रमुख आंचलिक कहानी है - तीसरी कसम उर्फ मारे गये गुलफाम।

आंचलिक कहानी की विशेषताएं

(1) अंचल ही नायक -
(2) अंचल का समग्र चित्रण सांस्कृतिक भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(3) देशज भाषा व शब्दों का प्रयोग - बिदापत, मउप्रैया व भाट-भाँड़ा का प्रयोग।

(4) आंचलिक कहानीकार अपनी कहानी का दायरा देशज ग्रामीण परिवेश से लेता है।

अतः आंचलिक कहानी विधा ग्रामीण संस्कृति व समाज को साहित्य से जोड़ती है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सिद्ध साहित्य का विकास - 9-10वीं शताब्दी में बौद्ध महायान की सिद्धों द्वारा अपनी साम्प्रदायिक विशेषताओं व मान्यताओं के प्रचार हेतु किया गया था। प्रमुख सिद्धों के ने चर्यापदों की रचना की थी।

सिद्ध साहित्य में धार्मिक आडम्बरों व रूढ़ियों का विरोध किया गया है।

" पंडिअ सअल सत्य वक्खाणअ
देहहि बुद्ध बसन्त ण जाणअ।"

सिद्ध साहित्य में मंगलात्मक व प्रवृत्ति मार्ग की प्राप्ति पर बल दिया जाता था। सिद्धों ने पंचमकार पद्धति की प्राप्ति पर बल दिया है जिनमें - मत्स्य, मदिरा, मैथुन, मुद्रा पर अधिक

कम किया गया है। सिद्ध साहित्य
नारी के भोगमूलक स्वरूप पर बल देता है
सिद्धों ने गुरु भक्ति, जातिवाद
का विरोध किया। सिद्ध साहित्य
को लेकर हिंदी साहित्य में अलग-अलग
विचार है जैसे आ. शुक्ल
सिद्धों के साहित्य को साहित्य में
शामिल नहीं करते वहीं आचार्य
हजारी प्रसाद द्विवेदी सिद्ध काव्य
को साहित्य का हिस्सा मानते है।

आरम्भिक सिद्धों के काव्य का
प्रभाव नाथ व भक्ति साहित्य के कबीर
की अक्खड़ता व उलट बासियों के रूप
में देखा जा सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गोस्वामी तुलसी दास ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज की सभी समस्याओं को उठाया है तथा कवितावली में तुलसी दास ने ~~समाज~~ कलियुग वर्णन का सचित्र वर्णन किया है। गोस्वामी का कलियुग वर्णन एक तरह से तद्युगीन समाज का ही चित्रण है आचार्य शुक्ल ने तुलसी के काव्य को रचकिता ही साधनावस्था का काव्य कहा है

तुलसी का कलियुग वर्णन अ तद्युगीन समाज की ही अमानवीय स्थितियों का वर्णन

गोस्वामी तुलसी दास ने कवितावली के अ(काव्य में अकाल की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भयावहता व गंभीरता का चित्रण किया है

" कलि बारहिं बार दुकाल परै
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

तुलसी के समय किसान व श्रमिक का आर्थिक शोषण था तथा राजाओं के महलों के व उच्च लगान से इनका शोषण आम बात थी

तुलसी के समय गरीबी की समस्या अत्यन्त गंभीर थी। तथा बार-बार होने वाले युद्धों ने इसे और अधिक गंभीर बना दिया।

" खेती न किसान बलि
बली बनिक को चाकर चाकरी xxx
कहा जाय का करै।

तुलसी का समय हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता का समय था जिसका

drishti | दृष्टि The Vision

तुलसी ने जाति प्रथा तथा साम्प्रदायिकता के माध्यम से व्यक्त किया है साथ ही तुलसी ने इनका समन्वय भी किया है- हिन्दू-मुस्लिम - राम को 'गरीब नवाज' नाम से संबोधित किया है तथा

" माँग के खाइबो मसित को सोइबो " में भी व्यक्त किया है।

तुलसी के समय वर्णव्यवस्था का ह्रास हो रहा था तथा वर्णाश्रम धर्म की स्थिति को तुलसी जाति प्रथा के माध्यम से दिखाते है -

" बादहि शूद्र द्विजन्ह संग, हम तुमते कछु घाटि "

तुलसी समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति से भी चिंतित है। तथा क्योंकि उस समय महिला अत्याचार अपने चरम पर था तथा युद्धो में विजय

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

के साथ-ही महिला, बच्चों व ब्राह्मणों पर झुलाया। यह गर्व की अतः तुलसी का कलियुग वर्णन तुलसी के युगीन यथार्थ का ही चित्रण है। देश में मुगल सत्ता विद्यमान थी। तथा हिंदू राजाओं का पतन हो गया था।

अपने कलियुग वर्णन की समस्याओं के निवारण के रूप में तुलसी ने प्रभु श्रीराम व रामराज्य की अवधारणा को स्थापित किया है ताकि आमजन के दुखों का निवारण किया जा सके।

अतः तुलसी का कलियुगीन वर्णन उनके समय का ही चित्रण है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिन्दी के समकालीन यात्रा-वृत्तांत पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यात्रा वृतांत आधुनिक हिन्दी की नवीन विधा है। इसमें कलाकार अपनी यात्रा का रोचक व आंखो देखा चित्रण करता है तथा यात्रा के स्थान की सामाजिक, सांस्कृतिक भौगोलिक, राजनीतिक स्थिति व परम्पराओं का चित्रण करता है।

समकालीन यात्रा वृतान्तों में अज्ञेय, निर्मल वर्मा व राहुल सांकृत्यायन का यात्रा वृतान्त वर्णन प्रमुख है।

अज्ञेय — अरे - यायावर रहेगा याद
एक बूंद सहसा उछली
प्रमुख यात्रा वृतान्त संग्रह है।

राहुल सांकृत्यायन ने अपनी घुमक्कड़ी का पूरा शास्त्र ही रचा है -

जिनमें अलावा घुमक्कड़ी मध्य भाता है
राहुल के वृत्तान्तों में किन्नर देश में,
मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी रूस यात्रा,
हिमालय में प्रमुख है

निर्मल वर्मा भी हिंदी के प्रमुख
समकालीन यात्रा वृत्तान्तकार है वर्मा का
यात्रा वृतान्त अपनी संवेदना, चित्रात्मकता
व बिम्बात्मकता हेतु प्रसिद्ध है।
उनका प्रमुख यात्रा वृतान्तों के यूरोप,
चेकोस्लोवाकिया, रूस, लंदन व पेरिस
की यात्राएं प्रमुख है

वर्तमान समय के यात्रा वृतान्त
का साहित्य मे अनुराधा बेनीवाल
का नाम प्रमुखता से लिया जाता है
बेनीवाल ने अपनी घुमक्कड़ी

यूरोप वर्णन का आंखों डेका
का वर्णन किया है

आधुनिक समय में हिन्दी
यात्रा वृतान्त में वीडियो ब्लाग विधा भी
तेजी से लोक प्रिय हो रही है

यात्रा का व्यक्ति मनुष्य को
अधिक संवेदनशील, गुणी व नई
संस्कृतियों से परिचय कराती है
यात्रा वृतान्तो व जीवनी से प्रभावित
होकर एक कवि ने लिखा है -
"सैर कर गाफिल दुनिया की फिर जिंदगानी कहाँ
जिंदगानी गर रही तो ये जवानी फिर कहाँ।"

अतः यात्रा वृतान्त शैली वर्तमान
समय में अपने व प्रमुखता से विकसित
हो रही है

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) यथार्थवादी रंग-दृष्टि के आलोक में आधे-अधूरे की नाट्यभाषा और दृश्य-विधान की प्रकृति का परीक्षण कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आधे-अधूरे मोहन राकेश प्रसिद्ध नाटक है
आधे-अधूरे के प्रमुख पात्रों में
महेन्द्रनाथ व सावित्री है जो अपने
जीवन की यंत्रणाओं को झेल रहे हैं।

मोहन राकेश अत्यन्त सजग
नाटककार है राकेश की आधुनिक
नाट्य दृष्टि यद्यपि 'आषाढ़ का एक दिन'
लहरों के राजहंस के व्यापक हुई है परन्तु
उनकी रंगदृष्टि का आधुनिक व चरम रूप
आधे-अधूरे में देखा जा सकता है।

आधे-अधूरे की नाट्य भाषा

मोहन राकेश ने अपनी नाट्य भाषा
के लिए 'आषाढ़ का एक दिन' में प्रयुक्त रहे हैं
परन्तु यहाँ आषाढ़ का एक दिन ऐतिहासिक

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पृष्ठ भूमिके कारण तत्सम भाषा का प्रयोग है वही आधे अधूरे नाटक में 'आम बोल चाल' की भाषा का प्रयोग किया गया है भाषा एक दम लचकदार देशज, अंग्रेजी के शब्दों को शामिल किया।

राकेश की नाट्य भाषा में मौन की भाषा का भी प्रमुखता से प्रयोग किया है जिससे चरित्रों के मानसिक द्वन्द्व का उचित चित्रण हो सका है

राकेश ने आधे अधूरे में रंग संकेतों का उचित प्रयोग किया है

आधे अधूरे के दृश्य विधान

मोहन राकेश की रंग-दृष्टि भारत के मौलिक नाट्य मंच रचने की है जिसमें मानव व भाषा तत्व का

अधिक जोर दिया है और आधे अधूरे के नाट्य विधान में देखा जा सकता है -

① कथानक व कथावस्तु — आधुनिक मनुष्य के जटिल मनोभावों व स्त्री पुरुष सम्बंधों की घुटन व वेदना।

② दृश्य व अंक - आधे अधूरे में दृश्यों की संख्या कम होने के साथ-साथ सामान्य भी है।

③ चरित्र - आधे अधूरे में दो ही चरित्र प्रमुख है।

④ उद्देश्य - नाटक का उद्देश्य मनुष्य की वेदना व अमानवता का चित्रण है।

⑤ भाषा व संवाद → संवाद चुस्त, छोटे व गतिशील है।

अतः आधे अधूरे नाटक मोहन राकेश की यथार्थवादी रंग दृष्टि का ही निरूपण करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) हिंदी गद्य के विकास में बालकृष्ण भट्ट के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) चंद्रगुप्त नाटक में निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का अनावरण कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'चौथा सप्तक' का परिचय दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'कोणार्क' नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)